दुधवा, कतर्नियाघाट और किशनपुर अब एक ही दिन नहीं बंद होंगे

अमर उजाला ब्यूरो

पर्यटकों की सुविधा के लिए अलग-अलग दिन बंद करने का लिया गया फैसला

मानसून सीजन के लिए मोहम्मदी क्षेत्र में बनाया गया नया सफारी रूट

लखनऊ। दुधवा नेशनल पार्क, कतर्नियाघाट और किशनपुर वाइल्डलाइफ सेंक्चुरी अब एक ही दिन नहीं बंद किए जाएंगे। अभी तक तीनों जंगल एक ही दिन मंगलवार को बंद होते हैं। अब इनको अलग-अलग दिन मंगलवार, बुधवार व बृहस्पतिवार को बंद करने पर सहमति बनी है। यह फैसला पिछले दिनों प्रमुख सचिव वन अनिल कुमार की अध्यक्षता में हुई बैठक लिया गया है।

इसके अलावा मानसून में पर्यटकों की सुविधा के लिए लखीमपुर स्थित भीरा वन क्षेत्र में नए सफारी ट्रैक का विकास किया गया है। वहीं मानसून सफारी के लिए मोहम्मदी क्षेत्र में नया सफारी रूट भी बनाया गया है।

दुधवा कार्ययोजना के तहत हाल ही में स्टेक होल्डर्स और टूर-ट्रेवल ऑपरेटर्स की बैठक हुई थी। इसमें पर्यटकों के लिए मात्र सात महीने ही घूमने के अवसर उपलब्ध होने की समस्या बताई गई थी। बरसात में यह प्रभावित हो जाता था। इसे देखते हुए ईको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड की पहल पर विस्टाडोम ट्रेन शुरू की गई है। अब इसका लाभ पर्यटक साल भर ले सकेंगे। इसी प्रकार से मोहम्मदी क्षेत्र में विकसित सफारी ट्रैक भी साल भर पर्यटकों के लिए उपलब्ध रहेगा।

पर्यटन निदेशक प्रखर मिश्रा ने कहा कि दुधवा में ईको टूरिज्म विकास पर बोर्ड का फोकस है। इसके तहत नेचर गाइडों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वहीं स्थानीय समुदाय को पर्यटन से जोड़कर उनकी आय में वृद्धि करने के लिए उनके व्यंजन और क्राफ्ट को पर्यटकों तक पहुंचाया जाएगा। स्थानीय लोगों को रोजगार से जोड़ने के लिए नेचर गाइड, कैंटीन कर्मियों और खानसामों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

10 लाख लोगों ने देखी विस्टाडोम पर बनी रील

पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि ईको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड द्वारा हाल ही में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स को विस्टाडोम ट्रेन से भ्रमण कराया गया। इन्फ्लुएंसर्स ने ट्रेन से गुजरते हुए जंगलों, प्राकृतिक दृश्यों और विस्टाडोम ट्रेन के आकर्षण को कैमरे में कैद किया। इसमें कई रील को अब तक 8 से 10 लाख से अधिक लोगों ने देखा है।

एक ही दिन नहीं बंद होंगे अब सभी वन्यजीव अभयारण्य

राज्य ब्यूरो, जागरण • लखनऊ : ईको पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नई योजना पर काम शुरू कर दिया गया है। इसके तहत अब दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, कतर्नियाघाट और किशनपुर वन्यजीव अभयारण्य अलग-अलग दिनों में बंद किए जाएंगे। पहले इन्हें एक ही दिन बंद किया जाता था। ईको पर्यटन विकास बोर्ड और वन विभाग की बैठक में इस पर सहमति बन गई है। दिनों का चयन अगले सप्ताह तक कर लिया जाएगा। साथ ही बफर में सफर योजना के तहत भीरा व मोहम्मदी वन क्षेत्रों में पर्यटकों के लिए नए सफारी ट्रैक को विकसित किया गया है।

पर्यटन विभाग के निदेशक प्रखर मिश्रा ने बताया कि ईको पर्यटन विकास बोर्ड की कोशिश है कि दुधवा आने वाले पर्यटकों को वन संरक्षण को लेकर जागरूक किया जाए। इसके अंतर्गत नेचर गाइडों को वन्यजीवों के साथ जंगल के बारे में भी पर्यटकों को जानकारी देने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि दुधवा के आसपास बसी थारू जनजाति को पर्यटन से जोड़ा जा रहा है। इनके प्रसिद्ध खानपान को पर्यटकों तक पहुंचाने की तैयारी है। साथ ही स्थानीय लोगों को होमस्टे बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि दुधवा, कतर्नियाघाट और किशनपुर वन्यजीव अभयारण्य में संचालित की जा रही विस्टाडोम ट्रेन को पर्यटकों द्वारा काफी पसंद किया जा रहा है। वर्तमान में इसका टिकट वेटिंग में चल रहा है। इस ट्रेन में पर्यटकों को शीघ्र ही खाने की भी व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी।

दुधवा, कतर्नियाघाट और किशनपुर अब एक ही दिन नहीं बंद होंगे

पर्यटकों की सुविधा के लिए अलग-अलग दिन बंद करने का लिया गया फैसला

मानसून सीजन के लिए मोहम्मदी क्षेत्र में बनाया गया नया सफारी रूट

लखनऊ। दुधवा नेशनल पार्क, कतर्नियाघाट व किशनपुर वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी अब एक ही दिन नहीं बंद किए जाएंगे। अभी तक तीनों जंगल एक ही दिन मंगलवार को बंद होते हैं। अब इनको अलग-अलग दिन मंगलवार, बुधवार व बृहस्पतिवार को बंद करने पर सहमति बनी है। यह फैसला पिछले दिनों प्रमुख सचिव वन अनिल कुमार की अध्यक्षता में हुई बैठक लिया गया है।

इसके अलावा मानसून में पर्यटकों की सुविधा के लिए लखीमपुर स्थित भीरा वन क्षेत्र में नए सफारी ट्रैक का विकास किया गया है। वहीं मानसून सफारी के लिए मोहम्मदी क्षेत्र में नया सफारी रूट भी बनाया गया है।

दुधवा कार्ययोजना के तहत हाल ही में स्टेक होल्डर्स और टूर-ट्रेवल ऑपरेटर्स की बैठक हुई थी। इसमें पर्यटकों के लिए मात्र सात महीने ही घूमने के अवसर उपलब्ध होने की समस्या बताई गई थी। इसे देखते हुए ईको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड की पहल पर विस्टाडोम ट्रेन शुरू की गई है। पर्यटन निदेशक प्रखर मिश्रा ने कहा कि दुधवा में ईको टूरिज्म विकास पर बोर्ड का फोकस है। इसके तहत नेचर गाइडों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वहीं स्थानीय समुदाय को जोड़कर उनकी आय में वृद्धि करने के लिए उनके व्यंजन व क्राफ्ट को पर्यटकों तक पहुंचाया जाएगा। ब्यूरो

Dudhwa National Park to showcase Tharu culture, cuisine, and craft

HT Correspondent
letters@htlive.com

Tharu people's deep knowledge of local flora, medicinal herbs, and ecological patterns will be an integral part of guided experiences. SOURCED

LUCKNOW: In a novel initiative, the Uttar Pradesh Eco-Tourism Development Board has announced plans to actively involve the indigenous Tharu community in tourism development at Dudhwa National Park. The move aims to merge cultural heritage with eco-tourism, creating economic opportunities for the Tharu tribe while enriching the visitor experience.

Dudhwa Tiger Reserve, known for its rich biodiversity, is set to become a cultural hub as well. The Tharu people's deep knowledge of local flora, medicinal herbs, and ecological patterns will be an integral part of guided experiences, making them not just hosts but interpreters of the forest.

"The Tharu tribe has lived in perfect harmony with nature for generations. This initiative will turn their deep-rooted traditions into a sustainable source of income," said a Department of Tourism official.

> This initiative will turn their deep-rooted traditions into a sustainable source of income
>
> **AN OFFICIAL**

Tourists will also get to experience traditional Tharu cuisine such as Dhikri, Khadia, and Kapua—rice flour-based delicacies—either at local homestays or directly at resorts and hotels. The aim is to reach visitors even if they do not travel deep into Tharu villages.

Local handicrafts made from moonj grass, kaans, jute, and cotton will be showcased and sold at Tharu Shilpgrams, resort stalls, and community shops. These crafts reflect the tribe's resourcefulness and creativity, offering tourists an authentic take-home piece of Tharu culture.

The initiative includes regular cultural performances by Tharu artists. Traditional songs and dances like Sakhia, Dewli, Dhamar, Jhumra, and vibrant Holi celebrations will be staged at tourism hotspots, offering visitors deeper cultural immersion while providing local performers recognition and income.

Led by director of Tourism Prakhar Mishra and his team, the initiative is expected to serve as a model for community-led tourism across India, blending conservation, culture, and commerce in a sustainable framework.

According to Mishra, the board is encouraging the community to set up new homestays and upgrade existing ones, with support in hospitality training and infrastructure.

These homestays aim to go beyond accommodation, offering tourists a living experience of Tharu traditions, daily life, customs, and cuisine.

465 VILLAGE WOMEN BEING TRAINED IN LOCAL CRAFTS NEAR TOURIST SPOTS

PRAYAGRAJ : With an aim to expand rural tourism in Uttar Pradesh, villages near popular tourist destinations are being developed as rural tourism hubs by the UP tourism department under its rural tourism project. As part of this initiative, local stakeholders are being trained in various skills, officials said.

Local women and youth in selected villages are being trained in manufacturing and providing tourism-related products and services to help them become self-reliant.

Regional tourism officer of Prayagraj, Aparajita Singh, said that ODOP (One District One Product) items and local crafts have been chosen for the initiative. A total of 465 women have been selected from the Prayagraj division, including 185 from the Prayagraj district, she added. HTC